Toppersnotes
Unleash the topper in you

C-TET

सेंट्रल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

उच्च प्राथमिक स्तर (कला)

भाग – 1 (स)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. अव्यय	1
2. उपसर्ग	7
3. प्रत्यय	11
4. समास	38
5. संख्याज्ञानम्	53
6. समयज्ञानम्	58
7. महेश्वरसूत्राणि प्रश्नाः	61
8. वर्ण विचार	65
9. संधि	75
10. शब्द	94
11. धातु रूप व लकार	101
12. कारक व विभक्ति	105
13. क्रिया	111
14. वाच्य	114
15. वचन	120
16. विलोम शब्द	130
17. वाक्य निर्माण	137
18. वाक्य परिवर्तन	141
19. पर्यायवाची शब्द	143
20. संस्कृत भाषा में प्रश्न निर्माण	147
21. छंद	150
22. अपठित पद्यांश	161
23. अपठित गद्यांश	164
24. संस्कृत शिक्षण विधियाँ	167
25. संस्कृत भाषा कौशल विकास	207
26. मूल्यांकन	217

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वचन

वचन → संख्या को वचन कहते हैं। संस्कृत व्याकरण में वचन 3 होते हैं

(1.) एकवचन → जो संख्या एक को निर्धारित करता है

2. द्विवचन → जो संख्या 2 को निर्धारित करता है।

3. बहुवचन → जो दो से अधिक संख्याओं को निर्धारित करता है।

* तरल पदार्थ व विग्रहित वस्तुओं के वचन का निर्धारण पात्र से होता है।

पुरुष → जो क्रिया का स्थान निर्धारित करता है वह पुरुष कहलाता है। पुरुष 3 होते हैं।

1. उत्तम पुरुष → जब कर्ता अस्मद् शब्द का हो तो क्रिया उत्तम पुरुष की होती है।

2. मध्यम पुरुष → जब कर्ता युस्मद् शब्द का हो तो क्रिया मध्यम पुरुष की होती है।

3. प्रथम/अन्य पुरुष → जब कर्ता संज्ञा शब्द या तत् शब्द का हो तो क्रिया प्रथम पुरुष की होती है।

* उत्तम पुरुष सर्व फलदायी होता है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः/सा (वह)	तौ/ते (वे दोनों)	ते/ताः (वे सब)
द्वितीया	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
तृतीया	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

लकार → जो क्रिया का अर्थ निर्धारित करता है उसे लकार कहते हैं संस्कृत व्याकरण में लकार 10 होते हैं
जिनमें से 5 लकार प्रायोगिक हैं।

लकार	क्रिया - अर्थ
लट्	वर्तमानकालार्थ
लङ्	भूतकालार्थ
लृट्	भविष्यत् कालार्थ
लोट्	आज्ञार्थ
विधिलिङ्	चाहिए - अर्थ

धातु रूप → क्रिया का मूल रूप ही धातु होती है। धातु के 2 प्रकार होते हैं

(1.) परस्मैपदी धातु [सकर्मक] (2.) आत्मनेपदी धातु [अकर्मक]

Toppersnotes
Unleash the topper in you

पठ् धातु

लट् लकार

[वर्तमान कालार्थ]

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम "	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम "	पठामि	पठावः	पठामः

लृट् [भविष्यत कालार्थ]

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लङ् [भूतकालार्थ]

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

Toppersnotes
Unleash the topper in you

लोट् [आदेश, आज्ञार्थ]

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् [चाहिए - अर्थ]

प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

आत्मनेपदी [सेवा करना]

[लट् लकार] सेव् धातु

प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

Toppersnotes
Unleash the topper in you

कारक
कृ + ण्वुल
↓
कार + अक → वाला

हिन्दी → 8

संस्कृत → कारक - 6
कर्ता कर्म करण
सम्प्रदान अपादान अधिकरण

कारक → कारक शब्द में "कृ" धातु है और ण्वुल प्रत्यय है "ण्वुल" प्रत्यय का "वु" शेष रहता है।

* "युवोरनाको" सूत्र से 'वु' के स्थान पर "अक" हो जाता है। यह प्रत्यय "वाला" अर्थ में प्रयुक्त होता है। अत: कारक शब्द का शाब्दिक अर्थ "करने वाला" होता है।

कारक → (1) "क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्। (2) क्रियोत्पादकं कारक

* अर्थात क्रिया के जनक को अथवा उत्पादक कर्ता को कारक कहते हैं

* संस्कृत व्याकरण में 6 कारक होते हैं।

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण

4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण

सम्बन्ध → सम्बन्ध को कारक नहीं माना गया है। क्योंकि इसमें क्रिया का अभाव होता है

* कर्ता आदि 6 कारकों के अलावा जो शेष बचता है उस शेष को सम्बन्ध कहते हैं।

सम्बोधन → सम्बोधन भी स्वतंत्र कारक नहीं होता है सम्बोधित करने वाला स्वयं कर्ता ही होता है। अत: 'सम्बोधने च" सूत्र से सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होती है।

विभक्ति → संस्कृत व्याकरण में विभक्तियाँ 7 होती हैं जिनको 2 भागों में विभक्त किया गया है।

1. कारक विभक्ति
2. उपपद विभक्ति

* दोनों में से कारक विभक्ति बलदायी होती है

प्रयोगार्थ

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से द्वारा [साधन]
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	अलग होना
कारक का अभाव → षष्ठी	* सम्बन्ध *	का के की
सप्तमी	अधिकरण	में / अन्दर / पर

प्रथमा विभक्ति कर्ता कारक

* " प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

प्रातिपदिकार्थमात्रे — रामः श्री लक्ष्मी उच्चैः आदि।

लिङ्गमात्रे — तटः तटी तटम्।

परिमाणमात्रे — द्रोणो व्रीहिः। [द्रोणो → 20kg व्रीहि-धान]

वचनमात्रे — एकः द्वौ बहवः।

* नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकः।

तट - किनारा

* अर्थात जो क्रिया को करने के लिये निश्चित रूप से उपस्थित रहता है वह प्रातिपदिक कहलाता है। प्रातिपदिक को ही व्याकरण में कर्ता कहा जाता है और कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

* "तट" शब्द में लिङ्ग अधिकता [तीनों लिंगों का भाव] होती है अत: "तट" शब्द में भी प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होगी।

* मापी हुई अथवा तौली हुई वस्तु में भी प्रथमा विभक्ति होती है।

* जहाँ वचन की बाहुल्यता होती है वहाँ भी प्रथमा विभक्ति होती है।

द्वितीया विभक्ति कर्म कारक

1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म
   * कर्ता अपनी क्रिया के लिये जिसको सर्वाधिक चाहता है उसे कर्म कहते हैं।
2. कर्मणि द्वितीया
   * अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

Ex:-

मोहन फल खाता है।	तुम दोनों फल खा चुके।
मोहन: फलं खादति।	युवां फलम् अखादतम्।
तुम दोनों दो लेख लिखोगे।	तुम फल खा चुके।
युवां लेखौ लेखिष्यथ:।	त्वं फलम् अखाद:।
बालक पाठ पढ़ते हैं।	तुम दो फल खा चुके।
बालका: पाठं पठन्ति।	त्वं फल अखाद:।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

मैं, तुम, और वह गाँव जाएँगे।
अहं, त्वं सः च ग्रामं गमिष्याम:।

सीता और तुम दोनों पत्र लिखो।
सीता युवां च पत्रं लिखत।

वह और हम दोनों दो पुस्तक पढ़ते हैं
सा आवां च पुस्तकें पठाम:।

वे सब माला गूँथती हैं। तुम माला गूँथते हो।
ता: माला गुम्फन्ति। त्वं मालां गुम्फसि।

है — अस्ति
हैं — स्त:
बहुवचन हैं — सन्ति
प्रति — की ओर
हृ — हरना
बाली — राजा
भात — पके हुए चावल
गर्गों को — सेनापतियों को
ओदनं — पकाना

3. "अकथितं च"

अभित: (दोनों ओर) परित: (चारों ओर) समया (समीप) निकषा (निकट) हा (कष्ट) प्रतियोगेऽपि (की ओर) — इनके योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है।

दुह् याच् पच् दण्ड् रुध् प्रच्छ्
चि ब्रू शास् जि, मथ् मुष्
नी हृ कृष् वह्।

* इन सोलह द्विकर्मक धातुओं के योग में भी गौण कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है

1. दुह् — ग्वाला गाय का दूध दुहता है।
गोपाल: गां पय: दोग्धि।

2. याच् - वह बलि से पृथ्वी माँगता है।
स: बलिं वसुधां याचते।

3. माता चावलों से भात पकाती है
माता तण्डुलान् ओदनं पचति।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5. राजा सेनापतियों को सौ रुपये का दण्ड देता है।
राजा गर्गान् शतं दण्डयति।

*6. ग्वाला बाड़े में गाय को रोकता है।
गोपालः व्रजमवरुणद्धि गां।

6. वह बालक से मार्ग पूछता है।
सः - माणवकं पन्थानं पृच्छति

7. माली वृक्ष से पुष्प चुनता है।
मालाकारः वृक्षं पुष्पाणि अवचिनोति।

माणवक - बालक
पन्थान - मार्ग
व्रज भूमि - गायों की भूमि
आपण - बाजार

8. गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है। अथवा धर्म की बात कहता है।
गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ते/ब्रूते।

9. राम देवदत्त के सौ रुपये जीतता है।
रामः देवदत्तं शतं जयति

10 विष्णु समुद्र से अमृत मथता है।
विष्णुः क्षीरनिधिं सुधां मथ्नाति।

11. राम श्याम के सौ रुपये चुराता है।
रामः श्यामं शतं मुष्णाति।

12. वह गाँव से बकरी ले जाता है
सः ग्रामम् अजां नयति [ले जाता है]

13 वह गाँव से बकरी हरता है
सः ग्रामम् अजां हरति।

14. वह गाँव से बकरी खींचता है।
स: ग्रामम् अजां कर्षति

15. वह गाँव से बकरी ढोता है।
स: ग्रामम् अजां वहति
गाँव के दोनों ओर नदी है
ग्रामम् अभित: नदी अस्ति।

नयति - ले जाना
हरति - हरना
कर्षति - खींचना
वहति - ढोना

4. "उपान्वध्याङ् वस:

* वस् (रहना) धातु के पूर्व में "उप / अनु / अधि / आङ् में से कोई सा भी उपसर्ग हो तो आधार के स्थान पर कर्म हो जाता है अर्थात सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीय विभक्ति हो जाती है और वाक्य के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

* हरि वैकुण्ठ में रहता है। हरि: वैकुण्ठम् उपवसति।

* मोहन गाँव में रहता है। मोहन: ग्रामम् अनुवसति/उपवसति।

* तुम और वे दोनों लेख लिखोगे। त्वं तौ च लेखं लेखिष्यथ

* तुम दोनों और मैं दो फल खाते हैं। युवां अहं द्वे फले खादाम:।

* सीता और वे सब जयपुर में रहते हैं। सीता ते च जयपुरम् उपवसन्ति।

अधिशीङ् स्थासां कर्म

शीङ: - शयन करना
स्था - ठहरना
आस् - बैठना

* इनके पूर्व अधि उपसर्ग होतो आधार के स्थान पर कर्म हो जाता है अर्थात सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीय विभक्ति होती है।

विलोमार्थी शब्द

विलोमार्थी शब्दरू विलोम किसी शब्द का विलोम शब्द उस शब्द के अर्थ से उल्टा अर्थ वाला होता है। शब्द विलोम संशय अच्छा बुरा राजा रंक या रानी या प्रजा पूर्ण अपूर्ण स्त्री शब्द करनेवाले शब्दों को विपरातार्थक शब्द (विलोम संस्कृत द्व व्याकरण) शब्द कहते हैं- जैसे- शब्द विलोम अमृत विष सम्मान अपमान प्रश्न उत्तर आदर अनादर, निरादर कुछ शब्द ऐसे है।

संस्कृत विलोम शब्द

संख्या	शब्द	विलोम
1.	अवनति	उन्नति
2.	अन्तरंग	बहिरंग
3.	अल्पज्ञ	बहुज्ञ
4.	अल्पायु	दीर्घायु
5.	अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
6.	अन्तर्मुखी	बहिर्मुखी
7.	अपेक्षा	उपेक्षा
8.	अग्रजः	अनुजः
9.	अज्ञः	विज्ञः
10.	अथ	इति
11.	अनुग्रह	विग्रह
12.	अतिवृष्टिः	अनावृष्टिः
13.	आविर्भावः	तिरोभावः
14.	आचारः	अनाचारः
15.	अधिकांशः	अल्पांशः
16.	अपराण	पूर्वाह्न
17.	अपररात्र	पूर्वरात्र
18.	अधमर्णः	उत्तमर्णः
19.	आर्तिकर	आर्तिहर

20.	अवनि	अम्बरः
21.	आर्द्रः	शुष्कः
22.	अमावस्या	पूर्णिमा
23.	अनुलोम	प्रतिलोम
24.	अंधकारः	प्रकाशः
25.	अल्पसंख्यकः	बहुसंख्यकः
26.	असभ्यः	सभ्यः
27.	अशिव	शिव
28.	अनावरण	आवरण
29.	अभीष्टः	अनभीष्टः
30.	अनुपस्थितः	उपस्थितः
31.	अकर्मण्य	कर्मण्य
32.	अपकीर्तिः	कीर्तिः
33.	आभ्यन्तर	बाह्य
34.	अनिवार्य	वैकल्पिक
35.	अद्य	पश्चात्
36.	अपकर्ष	उत्कर्ष
37.	अवाङ्मुख	उन्मुख/ऊर्ध्वमुख
38.	आकीर्ण	विकीर्ण
39.	आकर्षण	विकर्षण
40.	अत्यधिक	स्वल्प
41.	अधित्यका	उपत्यका
42.	अद्यतन	पुरातन
43.	अनुरक्ति	विरक्ति
44.	अमिष	निरामिष